भारत के संतों द्वारा सामाजिक समरसता के प्रयास

डॉ.संजय निमावत,
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्रीमती पी.एन.आर.शाह महिला आर्ट्स & कामर्स कालेज,
पालिताना(गुजरात)

हमारा देश और प्रजा बहुत मुश्किल से किसी सच्ची बात को जीवन में आचरण में लातीहै | व्यक्ति की भौतिक प्रगति होना आसान है किन्तु उसकी नैतिक प्रगति कठिन है | नैतिक या आतंरिक प्रगति के बिना की गई भौतिक प्रगति व्यक्ति को शांति और चिर सुख प्रदान नहीं करती यह सर्वविदित है | हमारे देश के संतों ने प्रजा-समाज को यह समझाया अपने जीवन अनुभवों से कि अगर सुखपूर्वक, समृधिपूर्वक, शांतिपूर्वक जीना है तो अपने जीवन-आचरण में नैतिकता लाओ | नैतिकता आएगी तो मानवता आएगी | मानवता से वैर-विरोध, जाति-पांति, उंच-नीच समाप्त होगा और समाज में समरसता आएगी |

संत उन्हीं को कहा जाता है, जिनकी द्रष्टि में समदर्शिता, समानता और समानता हो | संतों की द्रष्टि में पक्षपात, तेरा-मेरा नहीं होता | वे समदर्शी होते हैं | सभी क्षेत्रों में – चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या आर्थिक, धार्मिक अथवा आध्यात्मिक |

भारतीय सन्त परम्परा में यह वृत्ति एवं प्रवुत्ति देखने को मिलती है | उन्होंने सभी जीवों में परमात्मा का वास देखकर प्रत्येक आत्मा या जीव को ईश्वर का ही अंश मानकर देखा है | इसलिए उनमें एकात्म-द्रष्टि सहज विद्यमान रहती है | फिर क्या उंच, क्या नीच, क्या जाति, क्या वर्ण |

श्रीरामानन्दचार्याजी के मुख्य १२ शिष्यों में हरेक वर्ग और हर प्रकार के दलित एवं स्त्रियाँ भी रहे हैं | उन्होंने सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर सबको सामान मानकर अपनी विचारधारा को कार्यान्वित किया | इसीलिए संतकबीर ने लिखा –

'जाति-पांति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई |'

इसके अलावा आध्य शंकराचार्य ने देश की एकता, अखंडता एवं समरसता के निर्माण में बड़ा योगदान दिया | एकात्म भाव निर्माण के लिए पंचायतन पूजा अर्थात पंचदेवताओं की पूजा एवं चार मठों की स्थापना हजारों वर्षों तक एकता बनाये रखने के लिए हैं |

गुरुनानक देव ने सामूहिक भजन, भोजन एवम पूजन की बात की है – संगत, पंगत एवं गुरुद्वारा | संत तुलसीदास ने लोक भाषा में रामायण लिखकर लोक जागरण का कार्य किया | समाज में आत्मविश्वास का भाव एवं मुगलों से प्रतिकार करने का भाव जगाया | सम्पूर्ण देश में हनुमान मंदिरों और व्यायाम शालाओं का निर्माण करके शक्ति जागरण का कार्य किया |

आचार्य शंकरदेव ने आसाम क्षेत्र में वाम कर्मकांड का विरोध किया एवं प्रभुनाम का स्मरण करने के लिए प्रेरणा दी | नाटकों का मंचन प्रारंभ कर समाज जागरण का कार्य किया | गीता, भगवत, उपनिषदों का असमियाँ में अनुवाद कराया | नायनमार-अलवार ने दक्षिण क्षेत्र में भक्तिमय वातावरण बनाया तथा पूजा पध्धति में आये दोषों को दूर किया | समर्थ रामदास जी ने सामाजिक समरसता के भाव का निर्माण किया | अछूत वर्गों को भोजन कराने का उदहारण सर्वविदित है | हनुमान मंदिर एवं ११०० व्यायाम शालाओं की स्थापना की एवं उनके महंत तय किए | एक हजार सूर्यनमस्कार उनके शिष्यों द्वारा करने का दृष्टांत ध्यान देने योग्य है | शिवाजी को "छत्रपति शिवाजी" बनाने में समर्थ रामदास एवं उनके शिष्यों का बहुत बड़ा योगदान रहा है |

संत एकनाथजी ने मुगल शासनकाल में अपने व्यक्तिगत और व्यक्तित्व से अनेक उदाहरन प्रस्तुत किए | पिता के श्राध्ध में झुंडों को भोजन कराना हो अथवा गधे को गंगाजल पिलाना हो | संत तुकाराम ने 'अभंगों' की रचना कर समाज को दिशा प्रदान की और हिन्दू जीवन-दर्शन की बातें बताई | विद्यारण्य स्वामी ने दक्षिण भारत में हिन्दू साम्राज्य का बहुत बड़ा केंद्र विजय नगर साम्राज्य की स्थापना की | घर वापसी का काम उन्होंने प्रारम्भ किया | हरिहर एवं बुक्का को हिन्दू बनाया |

भक्त पीपाजी गांगरोन के महाराजा थे | वे अवतारी पुरुष थे | गुरुग्रंथ साहिब में उनकी वाणी का उल्लेख है | सामाजिक समरसता में उनका बड़ा योगदान है | जाति-पांति एवं ऊँच-नीच को समाप्त कर उन्होंने अपने गुरूजी से प्राप्त उपदेश को आगे बढाया | संत धन्ना भगत ढोन्ध के पास धुंवा गाँव के थे | सद्गुण उपासक थे, ऐसा कहा जाता है कि स्वयं श्रीकृष्ण उनकी खेती करते थे | बाबा रामदेव एक जागीरदार थे, फिर वे संत हो गए | समाज में उंच-नीच का भाव समाप्त करने के लिए कार्य किया | आज भी समाज उनमे श्रध्दा रखता है |

संत जम्बनाथजी ने बीस और नौ अर्थात २९ नियम बनाकर समाज को अहिंसा की प्रेरणा दी | जीव सुरक्षा एवं जीव दया का भाव निर्माण किया | जोधपुर के पास खेजडली गाँव में ३६३ विश्नोई समाज के महिला पुरुषों ने वृक्ष बचाने के लिए अपना बलिदान दे दिया | भक्त मीरा के सत्संग में जाति-पाति का भेद नहीं था | मेड़ता के कृष्ण मंदिर में प्रथम प्रसाद चर्माकार परिवार से चढाने का विधान है | राम सनेही सम्प्रदाय ने जातिपाति के बन्धनों को मिटाया | नाथ सम्प्रदाय, मारवाड़ एवं शेखावटी के हिन्दुओं को हिन्दू बनाये रखने में नाथ सम्प्रदाय का बहुत बड़ा योगदान है | गोविन्द गुरु ने वनवासी क्षेत्रों में मांसाहार एवं चोरी नहीं करने की शिक्षा दी |

कुलमिलाकर हमारे देश के संतों ने अपने विचार, आचार, साधना एवं सिध्धियाँ तथा जीवन अनुभवों से देश की जनता को सामाजिक समरसता का जीवन मंत्र दिया | सबको सामान नजर से देखने की द्रष्टि सिखाई | जाति, वर्ण, धर्म, ऊँच-नीच के भेद भुलाकर सबको सामान समझकर जीना सिखाया | यही उनकी सामाजिक समरसता प्रमाण है |

हमारे देश में संतों की महान परम्परा रही है | उनका जीवन कालजयी है | जीवन को जीने का जो सलीका हमें संतों ने सिखाया है ...काश हम उसका अनुसरण कर पाते ! तो आज हमारे हालात यह नहीं होते | संतों ने अखंडता और परस्पर सौहार्द बनाये रखने के लिए जो दर्शन हमारे सामने रखा है ...अगर हम उसका अनुकरण करते तो आज हम सही मायने में इन्सान कहलाने के हक़दार होते | सभी भाषा एवं प्रदेशों के संतों ने यह समझाया है | सभी धर्मों, सम्प्रदायों एवं सभी जाति-वर्ण के उपदेशकों ने यही बात कही है

और यह उपदेश सभी जाति-धर्म के लोगों के लिए सामान रूप से अनुकरणीय है | हमारे संतों ने हमें महान विरासत भेंट की है अब उस महान विरासत को हम अपने वर्तमान में अपनाते है या नहीं यह हमारे ऊपर निर्भर है | हमारा वर्तमान हमें भली-भांति दिख रहा है | हम जान-समझ रहे है कि हमे क्या करना चाहिये | जानबूझकर कुछ नहीं करेंगे तो भविष्य के परिणाम के जिम्मेदार हम ही होंगे |

धन्यवाद !